IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत में लोकतंत्र : समकालीन विश्लेषण

राखी कुशवाह, शोधार्थिनी
समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान विभाग
समाज विज्ञान संकाय
दयालबाग शिक्षण संस्थान, आगरा – 282005 उत्तर प्रदेश

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। राजनैतिक सहभागिता अधिकतर चुनाव के माध्यम से कार्यान्वित होती है। भारत में चुनाव, लोकतंत्र में सबसे बड़ा प्रयोग करते हैं। लोकतंत्र प्रणाली के सफलतापूर्वक कार्य करने के लिए, संविधान अनुच्छेद 324 के तहत चुनाव आयोग की व्यवस्था देता है। हमारे देश में संविधान के अनुच्छेद 324–329 चुनाव के प्रावधान के विषय में बताते हैं। चुनाव आयोग एक निष्पक्ष व स्वतंत्र निकाय है। भारत में चुनावों को एक उत्सव की भाँति लिया जाता है। भारत के लोकतंत्र की वैश्विक प्रतिष्ठा भी है और हमारा निर्वाचन आयोग कई विकासशील एवं अल्प–विकसित देशों में होने वाले चुनावों के संचालन में सहयोग भी देता है।

बाबा साहब अम्बेडकर के अनुसार, "लोकतंत्र, का अर्थ, एक ऐसी जीवन पद्धति जिसमें स्वतंत्रता, समता और बंधुता समाज–जीवन के मूल सिद्धांत होते हैं।" 'लोकतंत्र' शब्द का अंग्रेजी पर्याय 'डेमोक्रेसी' (Democracy) है जिसकी व्युत्पत्ति ग्रीक मूल शब्द 'डेमोस' से हुई है। डेमोस का अर्थ होता है– 'जनसाधारण' और इस शब्द में 'क्रेसी' शब्द जोड़ा गया है जिसका अर्थ 'शासन' या 'सरकार' होता है। **अब्राहम लिंकन** के अनुसार लोकतंत्र "जनता का जनता के द्वारा और जनता के लिए" (स्थापित) शासन प्रणाली है।

सरटोरी ने अपनी पुस्तक **'डेमोक्रेटिक थ्योरी'** में लिखा है कि राजनीतिक लोकतंत्र एक तरीका या प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रतियोगी संघर्ष से सत्ता प्राप्ति की जाती है और कुछ लोग इस सत्ता को नेतृत्व प्रदान करते हैं। सरटोरी के अनुसार लोकतंत्र काफी कठिन शासन है , इतना कठिन कि केवल विशेषज्ञ लोग ही इसे भीड़तंत्र से बचा सकते हैं अतः इसकी प्रक्रिया को मजबूत बनाना आवश्यक है।

भारत में लोकतंत्र का प्राचीन इतिहास

विश्व के विभिन्न राज्यों में राजतंत्र, श्रेणी तंत्र, अधिनायक तंत्र व लोकतंत्र आदि शासन प्रणालियां प्रचलित रही हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से अवलोकन करें तो भारत में लोकतंत्रात्मक शासन प्रणाली का आरंभ पूर्व वैदिक काल से ही हो गया था। प्राचीनकाल में भारत में सुदृढ लोकतांत्रिक व्यवस्था विद्यमान थी। इसके साक्ष्य हमें प्राचीन साहित्य, सिक्कों और अभिलेखों से प्राप्त होते हैं। विदेशी यात्रियों एवं विद्वानों के वर्णन में भी इस बात के प्रमाण हैं। वर्तमान संसद की तरह ही प्राचीन समय में परिषदों का निर्माण किया गया था, जो वर्तमान संसदीय प्रणाली से मिलती–जुलती थी। गणराज्य या संघ की नीतियों का संचालन इन्हीं परिषदों द्वारा होता था। इसके सदस्यों की संख्या विशाल थी। उस समय के सबसे प्रसिद्ध गणराज्य लिच्छवि की केंद्रीय परिषद में 7,707 सदस्य थे वहीं यौधेय की केंद्रीय परिषद के 5,000 सदस्य थे। वर्तमान संसदीय सत्र की तरह ही परिषदों के अधिवेशन नियमित रूप से होते थे।

प्राचीन गणतांत्रिक व्यवस्था में आजकल की तरह ही शासक एवं शासन के अन्य पदाधिकारियों के लिए निर्वाचन प्रणाली थी। योग्यता एवं गुणों के आधार पर इनके चुनाव की प्रक्रिया आज के दौर से थोड़ी भिन्न जरूर थी । सभी नागरिकों को वोट देने का अधिकार नहीं था। ऋग्वेद तथा कौटिल्य साहित्य ने चुनाव पद्धति की पुष्टि की है, परंतु उन्होंने वोट देने के अधिकार पर रोशनी नहीं डाली है ।

भारतीय लोकतंत्र के उद्देश्य

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। भारत में लोकतंत्र तब आया, जब 26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ। यह संविधान विश्व का सबसे लंबा लिखित संविधान है। संविधान में लोकतंत्र की संपूर्ण व्याख्या की गई है। लोकतंत्र के कुछ मौलिक उद्देश्य एवं विशेषताएं निम्न हैं:

1. जनता की संपूर्ण और सर्वोच्च भागीदारी, 2. उत्तरदायी सरकार, 3. जनता के अधिकारों एवं स्वतंत्रता की हिफाजत सरकार का कर्तव्य होना, 4. सीमित तथा सांविधानिक सरकार, 5. भारत को एक लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने , सभी नागरिकों को समानता , स्वतंत्रता और न्याय का वादा, 6. निष्पक्ष तथा आवधिक चुनाव, 7. वयस्क मताधिकार, 8. सरकार के निर्णयों में सलाह, दबाव तथा जनमत द्वारा जनता का हिस्सा, 9. जनता के द्वारा चुनी हुई प्रतिनिधि सरकार, 10. निष्पक्ष न्यायालय, 11. कानून का शासन, 12. विभिन्न राजनीतिक दलों तथा दबाव समूहों की उपस्थिति, 13. सरकार के हाथ में राजनीतिक शक्ति जनता की अमानत के रूप में।

वर्तमान स्थिति?

लंदन स्थित **द इकोनॉमिस्ट इंटेलिजेंस यूनिट** प्रत्येक वर्ष वैश्विक स्तर पर देशों के लिये डेमोक्रेसी इंडेक्स यानी लोकतंत्र सूचकांक के परिणाम घोषित करता है। वर्ष 2019 के लिये 167 देशों का यह सूचकांक प्रस्तुत किया गया और इसमें भारत को 51वें स्थान पर रखा गया है, लेकिन 2020 की लोकतंत्र सूचकांक में भारत की रैंक 51वें स्थान से गिरकर 53वें स्थान पर रही। इस सूचकांक के आधार पर भारत को दोषपूर्ण लोकतांत्रिक (Flawed Democracy) देशों की श्रेणी में रखा गया है।

'द इकोनॉमिस्ट इंटेलिजेंस यूनिट' (ईआईयू) ने कहा कि प्राधिकारियों के ''लोकतांत्रिक मूल्यों से पीछा हटने'' और नागरिकों की स्वतंत्रता पर ''कार्रवाई'' के कारण देश 2019 की तुलना में 2020 में दो स्थान फिसल गया। जहाँ तक स्कोर का प्रशन है, पिछले 11 वर्षों में भारत को 2017 और 2018 दोनों वर्षों में समान रूप से सबसे कम स्कोर मिला। इस रिपोर्ट में एशिया की स्थिति में सुधार की प्रशंसा की गई है। लेकिन, चिंता का विषय यह है कि एशिया के अधिकतर देशों को दोषपूर्ण लोकतांत्रिक देशों की श्रेणी में रखा गया है।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) की हालिया रिपोर्ट के मुताबिक, भारत की लगभग 36 करोड़ आबादी अभी भी स्वास्थ्य, पोषण, स्कूली शिक्षा और स्वच्छता से वंचित है। दूसरी तरफ, देश का एक तबका ऐसा है जिसे किसी चीज़ की कोई कमी नहीं है।

विश्व असमानता रिपोर्ट के अनुसार, भारत की राष्ट्रीय आय का 22 फीसदी हिस्से पर सिर्फ 1 फीसदी लोगों का ही कब्ज़ा है और यह असमानता लगातार तेज़ी से बढ़ रही है। अंतर्राष्ट्रीय अधिकार समूह के मुताबिक, भारत के इस एक फीसदी समूह ने देश के 73 फीसदी धन पर कब्ज़ा किया हुआ है।

लैंगिक भेदभाव भी बहुत बड़ी समस्यां बनकर उभर रहा है। विश्व आर्थिक फोरम द्वारा जारी जेंडर गैप इंडेक्स में भारत 108वें पायदान पर है और UNDP द्वारा जारी लिंग असमानता सूचकांक–2017 में भारत को 127वें स्थान पर रखा गया है।

लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ माने जाने वाले मीडिया की स्वतत्रंता भी प्रशनों के घेरे में है। दरअसल, पेरिस स्थित गैर–सरकारी संस्था **'रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स'** द्वारा जारी **वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम इंडेक्स–2018** में भारत पहले की तुलना में दो स्थान नीचे उतरा है और इसे 138वाँ स्थान मिला।

इन 71 वर्षों में अन्य बातों के अलावा सांप्रदायिकता, क्षेत्रवाद और कट्टरवाद को भी श्रय मिला। इसकी वज़ह से असहिष्णुता की प्रवृत्ति भी बढ़ी है। जातिवाद की जड़ें लगातार गहरी होती जा रही हैं। निस्संदेह इस तरह की परिस्थितियाँ लोकतंत्र की कामयाबी की राह में बाधक बनती है।

सुधार के लिए क्षेत्र

लोकतंत्र की कामयाबी के लिये ज़रूरी है कि सरकार अपने निहित स्वार्थों से ऊपर उठकर जनता की आकांक्षाओं को पूरा करने की कोशिश करे। विकास के तमाम दावों के बावजूद देश में गरीबी, भुखमरी, बेरोज़गारी आदि बेहद गंभीर समस्याएँ है। आज़ादी के 71 वर्षों बाद भी करोड़ों लोग दयनीय जीवन जीने को मजबूर हैं।

जनता की भागीदारी की कमी की वज़ह से ही हमारा लोकतंत्र महज एक 'चुनावी लोकतंत्र' बनकर रह गया है। चुनाव में मतदान का प्रयोग एक अधिकार के रूप में नहीं, एक कर्त्तव्य के रूप में किया जाने लगा है।

लोकतांत्रिक व्यवस्था को लेकर बुनियादी सवाल कहीं पीछे छूट गए हैं और लोकतंत्र में जनता की भागीदारी और लोकतांत्रिक संस्कृति को विकसित करने के लिये पहले बुनियादी समस्याओं को हल किया जाना ज़रूरी है ताकि लोकतांत्रिक व्यवस्था को सफल बनाया जा सके।

विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका लोकतांत्रिक शासन–पद्धति के अंग होते हैं, लेकिन इन तीनों में ही अव्यवस्था का बोलबाला है और ये बेहद दबाव में काम करती हैं।

इसके अतिरिक्त भारतीय लोकतंत्र में सुधार की बहुत गुंजाइश है इसके सुधार के लिए ये कदम उठाए जाने चाहिए :- गरीबी उन्मूलन, साक्षरता को बढ़ावा देना, लोगों को वोट देने के लिए प्रोत्साहित करना, लोगों को सही उम्मीदवार चुनने के लिए शिक्षित करना, बुद्धिमान और शिक्षित लोगों को नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित करना, सांप्रदायिकता का उन्मूलन करना, निष्पक्ष और जिम्मेदार मीडिया सुनिश्चित करना, निर्वाचित सदस्यों के कामकाज की निगरानी करना, लोकसभा तथा विधानसभा में ज़िम्मेदार विपक्ष का निर्माण करना इत्यादि।

निष्कर्ष

लोकतंत्र को विश्व के सबसे अच्छे शासन प्रणाली के रुप में जाना जाता है, यही कारण है कि हमारे देश के संविधान निर्माताओं और नेताओं ने शासन प्रणाली के रुप में लोकतांत्रिक व्यवस्था का चयन किया। भारत के वर्तमान लोकतंत्र की परिस्थिति का विश्लेषण करते हुए, हमें अपने देश के लोकतंत्र को और भी मजबूत करने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची–

- श्रीनिवासन, जानकी (2011): "लोकतन्त्र", (संपादकः राजीव भार्गाव और अशोक आचार्य, पुस्तकः राजनीति सिद्धांतः एक परिचय), नई दिल्लीः पीयर्सन, पृ0 108–132
- जोशी, रामशरण (2017): "इक्कीसवीं सदी की चुनौतियां और लोकतंत्र की वैचारिकी", दिल्लीः अनामिका
- बिस्वाल, तपन (2017): "भारतीय राजव्यवस्था और शासन", नई दिल्लीः ओरियंट ब्लैकस्वॉन, पृ0 291–292
- गाबा, ओम् प्रकाश (2016): "राजनीति सिद्धांत की रूपरेखा", नई दिल्लीः मयूर पेपरबैक्स, पृ0 237
- शर्मा, सुशील कुमारः "भारत में लोकतंत्र, उद्देश्य एंव उपलब्धियां", WEBDUNIA हिंदी, available at https://hindi.webdunia.com/current-affairs/bharat-mein-loktantra-hindi-117041100049 _1.html accessed on 08/Dec/2021
- Manisha, M. (2009): "Introduction (Democratic Politics in India: Concepts, Challenges and Debates", Edit. By Sharmila Mitra Deb and M. Manisha in book "Indian Democracy: Problem and Prospects", London: Anthem Press
- Roy, Krishna (2018): "Concept and Nature of India Democracy- A Theoretical Perspective", Pratidhwani the Echo (A Peer-Reviewed International Journal of Humanities & Social Science), Vol. VI, Issue-III, ISSN: 2278-5264, Pp. 207-224 https://www.thecho.in/files/Krishna-Roy.pdf
- "Democracy Index 2019: A Year of Democratic Setbacks and Popular Protest", London: The Economist Intelligence Unit, 2020, Pp. 6-69, available at https://www.in.gr/wp-content/uploads/2020/01/Democracy-Index-2019.pdf accessed on December 08/2021
- "Democracy Index 2020: In Sickness and in Health?", London: The Economist Intelligence Unit, 2021, Pp. 6-69 available at https://pages.eiu.com/rs/753-RIQ-438/images/democracy-index-2020.pdf accessed on December, 08/2021
- "India Falls to 53rd Position in EIU's Democracy Index", New Delhi: The Hindu, 03 Feb. 2021, available at https://www.thehindu.com/news/national/india-falls-to-53rd-position-in-eius-democracy-index/article33739128.ece accessed on December 09/2021